प्रश्न 1. सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे?

उत्तर—सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन इसलिए कहते थे क्योंकि वह देशभक्त था। उसने सिर पर गांधी टोपी धारणा कर रखी थी। उसकी स्वतत्रंता सेनानियों के प्रति अगाध श्रद्धा थी। इसी श्रद्धा और सम्मान के वशीभूत होकर ही वह सुभाषचंद्र बोस की प्रतिमा को चश्मा पहनाता था।

प्रश्न 2. हालदार साहब ने ड्राइवर को पहले चौराहे पर गाड़ी रोकने के लिए मना किया था लेकिन बाद में तुरंत रोकने को कहा—

(क) हालदार साहब पहले मायूस क्यों हो गए थे?

(ख) मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है?

(ग) हालदार साहब इतनी-सी बात पर भावुक क्यों हो उठे?

उत्तर—(क) हालदार साहब सुभाषचंद्र बोस की प्रतिमा को चश्मे के बिना देख चुके थे। उन्हें लगता था कि कैप्टन चश्मेवाले के मरने के बाद प्रतिमा चश्मे के बिना ही होगी। यह सोचकर पहले वे मायूस हो गए थे कि अब प्रतिमा की आँखों पर चश्मा पहनाने वाला कोई देशभक्त नहीं होगा।

(ख) मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा यह उम्मीद जगाता है कि देश में देशभक्तों की कमी नहीं है। देश के निर्माण में अपने-अपने ढंग से योगदान करने वालों का अभाव भी नहीं है। लोगों के हृदय में अब भी देशभक्ति की भावना है।

Scanned by TapScanner

(ग) हालदार साहब इतनी-सी बात पर इसलिए भावुक हो उठे कि देश में बड़े लोगों की अपेक्षा बच्चों में देशभक्ति की भावना अधिक है। स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति लोगों में अब भी सम्मान की भावना है। बच्चे भी देश के निर्माण में अपने-अपने ढंग से योगदान कर रहे हैं।

प्रश्न 3. आशय स्पष्ट कीजिए—

"बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-ज़िंदगी सब कुछ होम देनेवालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है।"

उत्तर—आशय—पानवाले से कैप्टन चश्मेवाले की मौत की खबर सुनकर हालदार साहब अपने मन में यह सोचने लगे कि उस देश और जाति का भविष्य क्या होगा जहाँ लोग देश की स्वतंत्रता और उसके कल्याण के लिए मर-मिटने वालों को अपने स्वार्थ के लिए भुला देते हैं। अपना सर्वस्व निछावर करने वाले देशभक्तों और शहीदों का लोग उपहास उड़ाते हैं। आज देशहित को नज़रअंदाज करके केवल अपने लिए जीने वाले लोग हैं। वे उन देशभक्तों को भी भूल गए हैं जिन्होंने अपना घर-बार, नाते-रिश्तेदार, अपना यौवन यहाँ तक अपने प्राणों का बलिदान देकर देश के लिए सर्वस्व अर्पण कर दिया।

प्रश्न 4. पानवाले का एक रेखाचित्र प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर—पानवाला काले रंग का एक थुलथुल और प्रसन्नचित आदमी था। वह पान बेचने के साथ-साथ पान भी बहुत खाता था। जब वह हँसता तो उसकी लाल-काली बतीसी दिखाई देती थी और तोंद भी हिलती थी। वह देशभक्त कैप्टन चश्मेवाले का मज़ाक उड़ाने से भी नहीं चूकता। लेकिन दूसरी ओर वह कैप्टन चश्मेवाले की मृत्यु पर उदास भी हो गया और उसकी आँखें भर आईं।

प्रश्न 5. "वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज़ में। पागल है पागल!"—कैप्टन के प्रति पानवाले की इस टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया लिखिए।

उत्तर—कैप्टन के प्रति पानवाले की उपरोक्त टिप्पणी में सर्वथा एक देशभक्त का भद्दे ढंग से मज़ाक उड़ाया गया है। यह ठीक है कि वह अपाहिज होने के कारण फ़ौज़ में नहीं जा सकता था लेकिन वह भी अपने तरीके से देश की सेवा कर रहा था। ऐसे देशभक्त का मज़ाक उड़ाना पानवाले की दूषित मानसिकता का परिचायक है। इस टिप्पणी के लिए पानवाले की जितनी भर्त्सना की जाए वह कम होगी।

रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 6. निम्नलिखित वाक्य पात्रों की कौन-सी विशेषता की ओर संकेत करते हैं—

(क) हालदार साहब हमेशा चौराहे पर रुकते और नेताजी को निहारते।

(ख) पानवाला उदास हो गया। उसने पीछे मुड़कर मुँह का पान थूका और सिर झुका कर अपनी धोती के सिरे से आँखें पोंछता हुआ बोला—साहब! कैप्टन मर गया।

(ग) कैप्टन बार-बार मूर्ति पर चश्मा लगा देता था।

उत्तर—(क) उपरोक्त वाक्य हालदार साहब की नेताजी के प्रति श्रद्धा, सम्मान और देशभक्ति की विशेषता की ओर संकेत करता है।

(ख) उपरोक्त वाक्य पानवाले का कैप्टन के प्रति लगाव को व्यक्त करता है। यह वाक्य उसके भावुक होने की विशेषता की ओर भी संकेत करता है।

(ग) उपरोक्त वाक्य कैप्टन चश्मेवाले की नेताजी के प्रति असीम श्रद्धा और देशभक्ति की विशेषता की ओर संकेत करता है।

Scanned by TapScanner

प्रश्न 7. जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को साक्षात देखा नहीं था तब तक उनके मानस पटल पर उसका कौन-सा चित्र रहा होगा, अपनी कल्पना से लिखिए।

उत्तर—जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को साक्षात देखा नहीं था तब तक उनके मानस पटल पर यह चित्र रहा होगा कि कैप्टन आज़ाद हिंद सेना का कोई भूतपूर्व सैनिक अथवा नेताजी सुभाषचंद्र बोस का साथी होगा। उसने देश के स्वतंत्रता आंदोलन में ब्रिटिश सेनाओं से सशस्त्र लोहा लिया होगा। वह भारतीय सेना का भूतपूर्व सैनिक होगा। वह शारीरिक रूप से हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति होगा। उसके मन में नेताजी के त्याग-बलिदान के प्रति गहरी आस्था होगी तभी वह नेताजी की प्रतिमा को चश्मा पहनाता है।

प्रश्न 8. कस्बों, शहरों, महानगरों के चौराहों पर किसी-न-किसी क्षेत्र के प्रसिद्ध व्यक्ति की मूर्ति लगाने का प्रचलन-सा हो गया है—

(क) इस तरह की मूर्ति लगाने के क्या उद्देश्य हो सकते हैं?

(ख) आप अपने इलाके के चौराहे पर किस व्यक्ति की मूर्ति स्थापित करवाना चाहेंगे और क्यों?

(ग) उस मूर्ति के प्रति आपके एवं दूसरे लोगों के क्या उत्तरदायित्व होने चाहिए?

उत्तर—(क) इस तरह की मूर्ति लगाने के उद्देश्य यह हो सकते हैं—देश के स्त्री-पुरुष और बच्चे सभी उस प्रसिद्ध व्यक्ति के बारे में जानें। उसकी मृत्यु के बाद भी उसके कामों को याद रखा जाए।

(ख) हम अपने इलाके में महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस, सरदार पटेल, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी में से किसी एक की मूर्ति लगाना चाहेंगे क्योंकि ये सभी भारत की स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिए संघर्ष करने वाले सेनानी हैं। महाराणा प्रताप और छत्रपति शिवाजी भारतीय इतिहास में देश के स्वाभिमान के प्रतीक हैं। ये सभी देशभक्ति, देश-प्रेम से परिपूर्ण थे। इन्होंने जीवन की समस्त सुख-सुविधाओं को त्याग कर देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। देश के नागरिक स्वतंत्रता-आंदोलन में उनके योगदान को जानकर स्वतंत्रता के महत्व को समझ सकेंगे और देश की स्वतंत्रता, एकता और अखंडता की रक्षा करने की प्रेरणा ले सकेंगे।

(ग) उस मूर्ति के प्रति हमारे एवं दूसरे लोगों का यह उत्तरदायित्व होता है कि वे मूर्ति की रक्षा करें। उसे खंडित न करें। उसे साफ़-सुथरा रखें। उसके आस-पास के क्षेत्र की भी साफ़-सफ़ाई का ध्यान रखें। यदि मूर्ति का कोई अंश खंडित हो जाए तो तुरंत उसकी मरम्मत करवाएँ। उनके जन्मदिन अथवा मृत्यु के दिन समारोह आयोजित कर, उनके कार्यों की विस्तार से चर्चा करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करें ताकि नागरिकों को उससे प्रेरणा मिले।

प्रश्न 9. सीमा पर तैनात फ़ौजी ही देश-प्रेम का परिचय नहीं देते। हम सभी अपने दैनिक कार्यों में किसी-न-किसी रूप में देश-प्रेम प्रकट करते हैं; जैसे—सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान न पहुँचाना, पर्यावरण संरक्षण आदि। अपने जीवन-जगत से जुड़े ऐसे कार्यों का उल्लेख कीजिए और उन पर अमल भी कीजिए।

उत्तर—हम सब लोग निम्नलिखित रूपों में देश-प्रेम प्रकट करते हैं :

अपनी गली-मोहल्ले की साफ़-सफ़ाई रखना। घर का कूड़ा-करकट सड़क पर न फेंकना। बिजली की चोरी न करना। बिजली का दुरुपयोग न करना। जल-स्रोतों में पशुओं को स्नान न करवाना; उनमें मल-मूत्र व अन्य विषैले पदार्थ न बहाना। नदियों में शवों को न बहाना। रेडियो, टेलीविज़न तथा लाउडस्पीकर की आवाज़ को धीमा रखना। सार्वजनिक यातायात के साधनों को साफ़-सुथरा रखना, उन्हें तोड़-फोड़ से बचाना। देश की एकता-अखंडता

Scanned by TapScanner

को बनाए रखने के लिए प्रयास करना। सांप्रदायिक सद्भाव व भाईचारा बनाए रखना। राष्ट्रगान, राष्ट्रध्वज के प्रति सम्मान रखना। कानून-व्यवस्था को बनाए रखना। न्यायपालिका में आस्था रखना। अपने अधिकारों और कर्तव्यों का पालन करना। देशहित के विरुद्ध कार्य न करना। देश के सभी नागरिकों, नदियों-नालों, पहाड़ों वनस्पतियों, पशु-पक्षियों से प्रेम करना। देश की चहुँमुखी प्रगति और समृद्धि के लिए प्रयास करना। देश के स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग, बलिदान का सम्मान करते हुए उनसे प्रेरणा प्राप्त करना। अपने देश की अन्य देशों से तुलना करते हुए निंदा न करना। संसार की जातियों के मध्य अपनी जाति अथवा देश की स्वतंत्र सत्ता का अनुभव करना।

प्रश्न 10. निम्नलिखित पंक्तियों में स्थानीय बोली का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है, आप इन पंक्तियों को मानक हिंदी में लिखिए—

कोई गिराक आ गया समझो। उसको चौड़े चौखट चाहिए। वो कैप्टन किदर से लाएगा? तो उसको मूर्तिवाला दे दिया। उदर दूसरा बैठा दिया।

उत्तर—समझिए, कोई ग्राहक आ गया। उसको चौड़ा फ्रेम चाहिए। कैप्टन कहाँ से लाएगा? तब उसे मूर्ति वाला फ्रेम उतार कर दे दिया। उधर मूर्ति को दूसरा पहना दिया।

प्रश्न 11. 'भई खूब! क्या आइडिया है।' इस वाक्य को ध्यान में रखते हुए बताइए कि एक भाषा में दूसरी भाषा के शब्दों के आने से क्या लाभ होते हैं?

उत्तर—भाषा में भावों को वहन करने की क्षमता आती है। भाषा जीवंत बनती है। भाषा समृद्ध होती है। पर्यायवाची शब्दों की मात्रा बढ़ती है। भाषा आम बोलचाल की सरल और सुबोध बनती है। एक भाषा में दूसरी भाषा के शब्दों को आत्मसात करने की क्षमता बढ़ती है।

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 12. निम्नलिखित वाक्यों से निपात छाँटिए और उनसे नए वाक्य बनाइए—

(क) नगरपालिका थी तो कुछ-न-कुछ करती भी रहती थी।

(ख) किसी स्थानीय कलाकार को ही अवसर देने का निर्णय किया गया होगा।

(ग) यानी चश्मा तो था लेकिन संगमरमर का नहीं था।

(घ) हालदार साहब अब भी नहीं समझ पाए।

(ङ) दो साल तक हालदार साहब अपने काम के सिलसिले में उस कस्बे से गुज़रते रहे।

उत्तर—निपात — वाक्य

(क) तो, भी — मैं तो जुलूस में अवश्य भाग लूँगा, तुम भी आ जाना।

(ख) ही — अपने पड़ोसी से सदा बना के रखो, आवश्यकता पड़ने पर पहले पड़ोसी ही पहुँचेगा।

(ग) तो — वह रामनगर पहुँचा तो था लेकिन मेरी उससे भेंट नहीं हो पाई।

(घ) भी — भारत अब भी पाकिस्तान के नापाक इरादों को नहीं समझ पाया।

(ङ) तक — तुमने मुझे टेलीफ़ोन तक नहीं किया।

प्रश्न 13. निम्नलिखित वाक्यों को कर्मवाच्य में बदलिए—

(क) वह अपनी छोटी-सी दुकान में उपलब्ध गिने-चुने फ्रेमों में से नेताजी की मूर्ति पर फिट कर देता है।

(ख) पानवाला नया पान खा रहा था।

(ग) पानवाले ने साफ़ बता दिया था।

Scanned by TapScanner

(घ) ड्राइवर ने ज़ोर से ब्रेक मारे।

(ङ) नेताजी ने देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया।

(च) हालदार साहब ने चश्मेवाले की देशभक्ति का सम्मान किया।

उत्तर—(क) उससे अपनी छोटी-सी दुकान में उपलब्ध गिने-चुने फ्रेमों में से नेताजी की मूर्ति पर फिट कर दिया जाता है।

(ख) पानवाले से नया पान खाया जा रहा था।

(ग) पानवाले द्वारा साफ़ बताया गया था।

(घ) ड्राइवर द्वारा ज़ोर से ब्रेक मारे गए।

(ङ) नेताजी द्वारा देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया गया।

(च) हालदार साहब से चश्मेवाले की देशभक्ति का सम्मान किया गया।

प्रश्न 14. नीचे लिखे वाक्यों को भाव वाच्य में बदलिए—

जैसे—अब चलते हैं—अब चला जाए।

(क) माँ बैठ नहीं सकती।

(ख) मैं देख नहीं सकती।

(ग) चलो, अब सोते हैं।

(घ) माँ रो भी नहीं सकती।

उत्तर—

(क) माँ द्वारा बैठा नहीं जा सकता।

(ख) मुझसे देखा नहीं जा सकता।

(ग) चलो, अब सोया जाए।

(घ) माँ द्वारा रोया भी नहीं जा सकता।

Scanned by TapScanner